International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 • Website: www.ijfmr.com • Email: editor@ijfmr.com

हाड़ौती प्रदेश में भित्ती चित्रकला का ऐतिहासिक अध्ययन

रेखा बैरवा

शोधार्थी (ज्योति विद्यापीठ महिला विश्विद्यालय, जयपुर)

सारांश

हाड़ौती प्रदेश - बूंदी, कोटा, झालावाड़ सम्मिलित क्षेत्र - राजस्थान का चौहान राजवंशीय सांस्कृतिक केंद्र है। यहाँ भित्ति चित्रकला का विकास प्रागैतिहासिक तिलस्वाड़ी गुफा चित्रों से प्रारंभ होकर मध्यकालीन राजपूत शैली में परिपक्व हुआ। 13वीं शताब्दी में राव देवा द्वारा बूंदी स्थापना के साथ कला संरक्षण प्रारंभ हुआ, किंतु स्वतंत्र हाड़ौती शैली का प्रथम प्रमाण राव सुरजन सिंह (1554-1585) के काल का है।1569 ई. में रणथंभौर अकबर को सौंपने के पश्चात् सुरजन ने उत्तर प्रदेश के चुनार किले में रागमाला भित्ति चित्र बनवाए, जो हाड़ौती शैली के प्रारंभिक दस्तावेज हैं। 17वीं शताब्दी में बूंदी के शत्रुसाल (1631-1658) ने रंगमहल बनवाया, जहाँ राग-रागिनी एवं नायक-नायिका भेद चित्रित हैं। भाव सिंह (1658-1681) के काल में चत्र महल एवं फूल महल में मतीराम रचित 'रस राज' तथा 'ललित लल्लम' के चित्र बने।18वीं शताब्दी हाड़ौती भित्ति चित्रकला का स्वर्णिम युग था। बूंदी के उम्मेद सिंह (1748-1770) ने 1760 ई. में चित्रशाला बनवाई - 12 कमरों, 500 से अधिक फ्रेस्को। कोटा में 1631 ई. शाहजहाँ द्वारा प्राप्त प्रांत में राम सिंह प्रथम (1696-1705) ने स्वतंत्र शैली प्रारंभ की। भीम सिंह (1707-1720) ने वल्लभ भक्ति प्रभाव से कृष्ण लीला चित्रण बढ़ाया। उम्मेद सिंह कोटा (1762-1819) के शासनकाल में शिकार दृश्यों ने चरमोत्कर्ष प्राप्त किया। 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश प्रभाव से राम सिंह द्वितीय (1821-1866) काल में यूरोपीय शैली मिश्रण हुआ।

प्रमुख शब्द :**हाड़ौती भित्ति चित्रकला, बूंदी शैली, कोटा शैली, राजपूत फ्रेस्को, रागमाला श्रृंखला, कृष्ण लीला, वल्लभ संप्रदाय, चित्रशाला बूंदी, कोटा गढ़, फ्रेस्को तकनीक।**

परिचय

हाड़ौती प्रदेश चंबल नदी घाटी में अवस्थित राजस्थान का सांस्कृतिक हृदयस्थल है। इसका विस्तार कोटा,बूंदी,

झालावाड़ और बारां जिले में फैला हैं। हाड़ौती राजवंश के चौहानों का यह क्षेत्र 13वीं शताब्दी से कला-संरक्षण का केंद्र रहा। 1241 ई. में राव देवा द्वारा बूंदी राज्य की स्थापना ने कला-पोषण की नींव रखी। प्रागैतिहासिक कालीन गुफा-चित्रों से प्रारंभ होकर यह परंपरा 16वीं शताब्दी में स्वतंत्र राजपूत भित्ति चित्रकला के रूप में विकसित हुई। कला का उद्भव एवं विकासराव सुरजन सिंह (1554-1585) के काल में मुगल सम्राट अकबर के साथ संधि के पश्चात् उत्तर प्रदेश के चुनार किले में निर्मित रागमाला भित्ति-चित्र हाड़ौती शैली के प्रथम लिखित प्रमाण हैं। 17वीं शताब्दी में बूंदी के शत्रुसाल (1631-1658) द्वारा रंगमहल तथा भाव सिंह (1658-1681) द्वारा चत्र-फूल महल में रस-सिद्धांत आधारित चित्र बने। 18वीं शताब्दी का स्वर्णिम युग था जब उम्मेद सिंह ने बूंदी चित्रशाला (1760 ई.) तथा कोटा के उम्मेद सिंह ने गढ़ महल बनवाए।

वर्तमान में हाड़ौती की भित्ति चित्रकला विश्व-स्तरीय धरोहर होते हुए भी संरक्षणविहीन है। कोटा गढ़ के 40% चित्र क्षयग्रस्त हैं। शैलीगत विश्लेषण, लिंग-चित्रण तथा डिजिटल संरक्षण पर शोध-अध्ययन न्यून हैं। पर्यटन-विकास के नाम पर अनियंत्रित हस्तक्षेप कला को नष्ट कर रहा है।

साहित्य समीक्षा

1. **डब्ल्यू.जी. आर्चर की 'Indian Paintings from the Punjab Hills' (1973) में हाड़ौती शैली को राजपूत चित्रकला की स्वतंत्र शाखा माना गया, जिसमें चुनार रागमाला को प्रारंभिक प्रमाण बताया।**
2. **जयसिंह नीरज के 'राजस्थान की चित्रकला' (1985) में बूंदी-कोटा उपशाखाओं का विस्तृत वर्गीकरण है।**
3. प्रमोद चंद्र की 'The Bundī School of Painting' (1956) रंगमहल एवं चित्रशाला के चित्रों का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करती है।
4. **स्थानीय अभिलेख: बूंदी राजकीय अभिलेखागार में शत्रुसाल (1631-58) काल के रंगमहल निर्माण आदेश तथा उम्मेद सिंह (1748-70) के चित्रशाला लिपियाँ उपलब्ध हैं। कोटा गढ़ के फ्रेस्को पर राम सिंह प्रथम (1696-1705) के संरक्षण पत्र महत्वपूर्ण हैं।**
5. **सुधा गी (2017) के 'Painted Rooms of Kota Garh' में कोटा गढ़ के 18 चित्रित कक्षों का विस्तृत वर्णन है, जहाँ शिकार दृश्यों को कोटा शैली का चरमोत्कर्ष बताया।**
6. **राम तोशी आर्या (2017) ने 'Bundi Garh Palace Paintings' में चित्रशाला के 500+ फ्रेस्को का दस्तावेजीकरण किया।**

शोध के उद्देश्य

1. **हाड़ौती भित्ति चित्रकला के ऐतिहासिक विकास का क्रमबद्ध विश्लेषण करना।**
2. **बूंदी एवं कोटा शैलियों की तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।**

3. **वल्लभ भक्ति एवं राजपूत वीरता के सांस्कृतिक प्रभाव का मूल्यांकन करना।**
4. **भित्ति चित्रकला संरक्षण हेतु व्यावहारिक सुझाव देना।**

शोध प्रश्न

1. **हाड़ौती भित्ति चित्रकला का विकास-क्रम क्या था?**
2. **बूंदी-कोटा शैलियों में प्रमुख शैलीगत भेद कौन से हैं?**
3. **वर्तमान संरक्षण चुनौतियाँ क्या हैं?**
4. **सांस्कृतिक-सामाजिक महत्व का आधुनिक संदर्भ क्या है?**

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध ऐतिहासिक एवं गुणात्मक (Qualitative) पद्धति पर आधारित है। इसमें हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, बूंदी आदि) की भित्ति चित्रकला का अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के आधार पर किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में गढ़ महलों के भित्ति चित्रों का अवलोकन, अभिलेखीय दस्तावेज तथा पुरातत्व विभाग की रिपोर्टें शामिल हैं, जबकि द्वितीयक स्रोतों में संबंधित पुस्तकों, शोध लेखों एवं जिला गजेटियर का उपयोग किया गया है।

अध्ययन में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक तथा तुलनात्मक विश्लेषण पद्धति अपनाकर भित्ति चित्रों की शैली, विषयवस्तु, रंग योजना तथा सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों का विश्लेषण किया गया है।

शोध का महत्व

वर्तमान में हाड़ौती की भित्ति चित्रकला विश्व-स्तरीय धरोहर होते हुए भी संरक्षणविहीन है। कोटा गढ़ के 40% चित्र क्षयग्रस्त हैं। शैलीगत विश्लेषण, लिंग-चित्रण तथा डिजिटल संरक्षण पर शोध-अध्ययन न्यून हैं। पर्यटन-विकास के नाम पर अनियंत्रित हस्तक्षेप कला को नष्ट कर रहा है।यह अध्ययन न केवल कला-इतिहास के लिए वरन समाजशास्त्र, सांस्कृतिक अध्ययन एवं पर्यटन-नीति निर्माण के लिए भी महत्वपूर्ण है। महिलाओं के शिकार-दृश्य चित्रण लिंग-अध्ययन को नई दृष्टि प्रदान करते हैं। डिजिटल संरक्षण मॉडल राष्ट्रीय धरोहरों के लिए आदर्श प्रस्तुत करें।

हाड़ौती प्रदेश में भित्ति चित्रकला का अध्ययन

1.**हाड़ौती क्षेत्र में प्रागैतिहासिक भित्ति चित्रण**

राजस्थान का हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, बारां, बूंदी एवं झालावाड़) अपनी मध्यकालीन चित्रकला के लिए जितना

प्रसिद्ध है, उतना ही यह क्षेत्र प्रागैतिहासिक शैलचित्रों की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यहाँ की विंध्याचल पर्वतमाला, चंबल एवं कालीसिंध नदी घाटियाँ और प्राकृतिक शैलाश्रय इस बात के साक्ष्य हैं कि आदिम मानव ने इस क्षेत्र में निवास किया तथा अपने जीवन अनुभवों को चट्टानों पर अंकित किया। ये शैलचित्र हाड़ौती के सांस्कृतिक इतिहास की सबसे प्राचीन परत को उद्घाटित करते हैं। हाड़ौती का भूभाग पठारी और पथरीला है। मुकुंदरा पहाड़ियाँ, दर्रा क्षेत्र, कालीसिंध और पार्वती नदियों के किनारे प्राकृतिक शैलाश्रय उपलब्ध हैं। आदिम मानव प्रायः ऐसे ही स्थानों को निवास हेतु चुनता था जहाँ जल, वन्यजीव और सुरक्षा उपलब्ध हो। यही कारण है कि कोटा और बारां जिलों में शैलचित्र अधिक संख्या में प्राप्त हुए हैं।

प्रमुख स्थल

1.1 दर्रा (मुकुंदरा पहाड़ियाँ), कोटा

दर्रा क्षेत्र, जो वर्तमान में मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिज़र्व का भाग है, हाड़ौती का प्रमुख प्रागैतिहासिक शैलचित्र स्थल है। यहाँ अनेक शैलाश्रयों की दीवारों पर लाल गेरू से मानव और पशु आकृतियाँ अंकित हैं। चित्रों में धनुष-बाण लिए हुए मानव, हिरण, जंगली बैल और सामूहिक शिकार दृश्य दिखाई देते हैं। इन चित्रों की शैली सरल किन्तु प्रभावशाली है। विद्वानों के अनुसार ये चित्र मुख्यतः मध्यपाषाण काल से संबंधित हैं।

1.2 आलनिया (कोटा के समीप)

अलनिया हाड़ौती क्षेत्र का अत्यंत महत्वपूर्ण शैलचित्र केंद्र है। यहाँ के चित्रों में नृत्य करते मानव समूह, पशु आकृतियाँ तथा ज्यामितीय चिह्न मिलते हैं। कई चित्र वृत्ताकार संरचना में बने हैं, जिससे सामूहिक अनुष्ठान या उत्सव का संकेत मिलता है। लाल तथा सफेद रंग का प्रयोग यहाँ स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अलनिया के शैलचित्र इस बात के प्रमाण हैं कि उस समय मानव केवल जीवित रहने तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक चेतना भी विकसित हो चुकी थी।

1.3 किशनगंज एवं शाहाबाद (बारां जिला)

बारां जिले के किशनगंज और शाहाबाद क्षेत्र में भी शैलचित्रों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। यहाँ कुछ स्थानों पर शैल-उत्कीर्ण (Petroglyphs) भी पाए गए हैं, अर्थात चित्रों को रंगने के बजाय पत्थर पर उकेरा गया है। इन चित्रों में पशु आकृतियाँ, मानव समूह तथा कुछ रहस्यमयी ज्यामितीय चिन्ह शामिल हैं। यह दर्शाता है कि हाड़ौती क्षेत्र में चित्रण की परंपरा विभिन्न रूपों में विकसित हुई।

हाड़ौती के प्रागैतिहासिक भित्ति चित्रों की विषयवस्तु मुख्यतः निम्न प्रकार की है–

1. शिकार दृश्य
2. वन्य पशु
3. सामूहिक नृत्य
4. युद्ध या संघर्ष
5. ज्यामितीय प्रतीक
6. चित्रों में मानव आकृतियाँ प्रायः रेखात्मक (stick figures) रूप में हैं। पशु आकृतियाँ अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट और बड़ी बनाई गई हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि पशु जीवन का केंद्रीय तत्व थे। रंगों में लाल गेरू का प्रमुख प्रयोग मिलता है, जो प्राकृतिक खनिजों से प्राप्त किया जाता था।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व

ये शैलचित्र हाड़ौती में मानव सभ्यता के प्रारंभिक चरण का दस्तावेज हैं। इनसे निम्न तथ्य स्पष्ट होते हैं–

1. जीवन का आधार शिकार था।
2. समाज सामूहिक गतिविधियों पर आधारित था।
3. धार्मिक या अनुष्ठानिक प्रवृत्तियों के प्रारंभिक संकेत मिलते हैं।
4. प्रकृति और मानव का गहरा संबंध था।

इस प्रकार, ये चित्र केवल कला नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक संरचना के द्योतक हैं।

मध्यकालीन ऐतिहासिक चित्रण

राजस्थान का हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, बूंदी, झालावाड़, बारां) मध्यकाल में कला और संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र रहा। विशेषकर 16वीं से 18वीं शताब्दी के मध्य यहाँ चित्रकला की एक विशिष्ट परंपरा विकसित हुई, जिसे सामान्यत: बूंदी और कोटा शैली के नाम से जाना जाता है। यह परंपरा राजपूत दरबारों के संरक्षण में विकसित हुई और मुगल प्रभाव के साथ स्थानीय सांस्कृतिक तत्वों के समन्वय से एक अनूठी पहचान प्राप्त की।मध्यकालीन हाड़ौती की चित्रकला केवल सजावटी कला नहीं थी, बल्कि यह राजनीतिक सत्ता, धार्मिक आस्था, प्रकृति-प्रेम और सामाजिक जीवन का दृश्य दस्तावेज भी थी। हाड़ौती में हाड़ा चौहान राजवंश का शासन रहा, जिनकी राजधानी क्रमश: बूंदी और बाद में कोटा रही। 17वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के साथ राजनैतिक संबंधों के कारण यहाँ की कला में मुगल शैली का प्रभाव दिखाई देता है, परंतु स्थानीय तत्वों ने इसे विशिष्ट पहचान प्रदान की।

1) बूंदी शैली का विकास

बूंदी में राव रतन सिंह और राव छत्रसाल के काल में चित्रकला को विशेष संरक्षण मिला। यहाँ की भित्ति चित्रकला में प्राकृतिक दृश्यों–विशेषकर वर्षा, बादल, वन और जलाशयों–का अत्यंत भावपूर्ण चित्रण मिलता है। बूंदी की चित्रशाला (गढ़ पैलेस) इसके उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। बूंदी शैली मध्यकालीन हाड़ौती चित्रकला का प्रमुख आधार है। यह शैली 17वीं शताब्दी में परिपक्व रूप में सामने आई।

प्रमुख विशेषताएँ

1.प्रकृति का सजीव चित्रण

बूंदी शैली की सबसे बड़ी विशेषता हरित पृष्ठभूमि, घुमावदार पहाड़ियाँ, कमल-सरोवर, बादल और वर्षा का आकर्षक चित्रण है। वर्षा-दृश्यों में काले बादल और बिजली की रेखाएँ अत्यंत प्रभावशाली हैं।

2.धार्मिक विषयवस्तु

- कृष्ण लीला
- रामायण प्रसंग
- रागमाला चित्र
- देवी-देवताओं के दृश्य

3.मानव आकृतियाँ

- स्त्री आकृतियाँ पतली कमर, बड़ी आँखें और सौम्य भावों के साथ चित्रित की गई हैं।
- पुरुष आकृतियाँ राजसी वस्त्रों और शस्त्रों के साथ दर्शाई गई हैं।

4.रंगों का प्रयोग- चमकीले लाल, हरे, नीले और सुनहरे रंगों का संतुलित प्रयोग मिलता है।

5.प्रमुख उदाहरण

- **बूंदी का गढ़ पैलेस (चित्रशाला)**
- **छत्रमहल की दीवारों पर भित्ति चित्र**
- **तारागढ़ किले के आंतरिक भाग**

इन चित्रों में दरबार, प्रेम-दृश्य, संगीत-सम्मेलन और धार्मिक आख्यान अंकित हैं।

2) कोटा शैली का विकास

कोटा में 18वीं शताब्दी में शिकार दृश्यों का यथार्थ और गतिशील चित्रण विशेष रूप से प्रसिद्ध हुआ। राजाओं के शिकार, हाथी-घोड़े, बाघ-शेर के दृश्य अत्यंत सजीव रूप में उकेरे गए। कोटा शैली में गति और नाटकीयता प्रमुख तत्व रहे। 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कोटा राज्य स्वतंत्र हुआ और वहाँ चित्रकला ने नई दिशा ग्रहण की। यद्यपि प्रारंभिक प्रभाव बूंदी का था, परंतु कोटा शैली ने अपनी अलग पहचान बनाई।

प्रमुख विशेषताएँ

1.शिकार दृश्य (Hunting Scenes)

कोटा शैली की विशिष्ट पहचान शिकार चित्र हैं। राजा हाथी या घोड़े पर सवार होकर बाघ या शेर का शिकार करते दिखाए गए हैं। इन चित्रों में गति और ऊर्जा का अद्भुत प्रदर्शन है।

2.गतिशील संरचना

पशुओं की दौड़, हाथियों की टक्कर, बाघ की छलांग - सब अत्यंत जीवंत रूप में अंकित हैं।

3.यथार्थवाद

कोटा शैली में पशु आकृतियाँ अधिक यथार्थवादी हैं।

4.दरबारी जीवन

राजदरबार, उत्सव और जुलूस भी चित्रित किए गए।

प्रमुख स्थल

- **कोटा गढ़**
- **दरबार हॉल की भित्तियाँ**

3) झालावाड़ और अन्य क्षेत्र

झालावाड़ में विकसित चित्रों में बूंदी और कोटा दोनों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। यहाँ धार्मिक और दरबारी दोनों प्रकार के चित्र मिलते हैं।

विषयवस्तु का विश्लेषण

हाड़ौती की भित्ति चित्रकला की विषयवस्तु बहुआयामी रही–

1. **धार्मिक आख्यान - कृष्ण लीला, रामायण, रासलीला, देवी-देवताओं के प्रसंग।**
2. **रागमाला चित्रण - संगीत और ऋतु-चक्र का प्रतीकात्मक निरूपण।**
3. **राजसी जीवन - दरबार, युद्ध, शिकार, उत्सव और समारोह।**
4. **लोक-संस्कृति - विवाह, होली, तीज, गणगौर जैसे त्योहार।**
5. **प्राकृतिक परिवेश - हरित वन, कमल-सरोवर, वर्षा-दृश्य, पहाड़ियाँ।**

शैलीगत विशेषताएँ

1. **रेखांकन में कोमलता और प्रवाह**

2. **स्त्री आकृतियों में लावण्य और भावाभिव्यक्ति**
3. **प्रकृति का सजावटी किंतु जीवंत चित्रण**
4. **चमकीले परंतु संतुलित रंगों का प्रयोग**
5. **गतिशील संरचना (विशेषकर शिकार दृश्यों में)**

बूंदी शैली में जहाँ रोमांटिक और प्राकृतिक सौंदर्य अधिक है, वहीं कोटा शैली में शक्ति और क्रियाशीलता प्रमुख है।

तकनीक और सामग्री

हाड़ौती की भित्ति चित्रकला में चूने की पलस्तर पर प्राकृतिक खनिज और वनस्पति रंगों का उपयोग किया जाता था। लाल, हरा, नीला, पीला और काला प्रमुख रंग रहे। कई स्थानों पर स्वर्ण अलंकरण भी देखा जा सकता है। चित्रांकन की प्रक्रिया में पहले रेखांकन किया जाता, फिर रंगों की परतें चढ़ाई जाती थीं।

हाड़ौती चित्रकला के प्रमुख चित्रकार-

1. चित्रकार डालू (कोटा शैली)

डालू कोटा शैली के सबसे महान चित्रकारों में गिने जाते हैं।

विशेष कार्य: इन्होंने कोटा शैली की सबसे बड़ी और प्रसिद्ध 'रागमाला' सेठ (1768 ई.) का चित्रण किया था।

प्रसिद्ध कृति: रागमाला सैट। यह वर्तमान में कोटा संग्रहालय और कुछ निजी संग्रहों में सुरक्षित है। इसमें राग-रागिनियों का बहुत ही सुंदर और सूक्ष्म चित्रण है।

2. चित्रकार सुरजन (बूंदी शैली)

ये राव सुरजन सिंह के समय के प्रमुख कलाकार थे और बूंदी शैली की नींव रखने वालों में से एक हैं।

विशेष कार्य: इन्होंने मध्यकालीन भक्ति और दरबारी जीवन को चित्रों में ढाला।

प्रसिद्ध कृति: इनके द्वारा चित्रित 'अहमद नगर की घेराबंदी' और 'हाथियों की लड़ाई' के दृश्य काफी चर्चित हैं।

3. चित्रकार नूर मोहम्मद (कोटा शैली)

कोटा के महाराव भीम सिंह और अर्जुन सिंह के समय के प्रमुख कलाकार।

विशेष कार्य: नूर मोहम्मद नारी सौंदर्य और शिकार के दृश्यों के माहिर थे।

प्रसिद्ध कृति: इनके चित्रों में 'महाराव भीम सिंह का जुलूस' और 'शिकार के दृश्य' (विशेषकर बाघ का शिकार) बहुत प्रसिद्ध हैं।

4. चित्रकार लच्छीराम (कोटा शैली)

विशेष कार्य: इन्होंने कोटा की प्रसिद्ध भित्ति चित्रकला (Wall Paintings) में बहुत योगदान दिया।

प्रसिद्ध कृति: कोटा के 'झाला जी की हवेली' और 'देवता जी की हवेली' के कई भित्ति चित्र लच्छीराम की कला का नमूना माने जाते हैं।

5. चित्रकार अहमद और रामलाल (बूंदी शैली)

इन दोनों ने मिलकर बूंदी शैली को 'पशु-पक्षियों की चित्रकला' के रूप में स्थापित किया।

विशेष कार्य: प्रकृति का सजीव चित्रण।

प्रसिद्ध कृति: 'नाचता हुआ मोर' और 'वर्षा में विहार करते हाथी'। बूंदी के महलों में स्थित 'चित्रशाला' (जिसे 'भित्ति चित्रों का स्वर्ग' कहा जाता है) में इनका बड़ा योगदान रहा है।

6. चित्रकार साहिबराम (झालावाड़ उप-शैली)

विशेष कार्य: झालावाड़ शैली बूंदी और कोटा का मिश्रण है। साहिबराम ने यहाँ के राजसी वैभव को चित्रित किया।

प्रसिद्ध कृति: झालावाड़ के राजमहलों के भित्ति चित्र जिनमें कृष्ण लीला और रासलीला के दृश्य प्रमुख हैं।

मुगल प्रभाव और स्थानीयता का समन्वय

मुगल दरबार से प्रशिक्षित कलाकारों के आगमन से चित्रकला में परिप्रेक्ष्य (Perspective), सूक्ष्म रेखांकन और यथार्थवाद आया। किन्तु हाड़ौती की चित्रकला ने स्थानीय प्राकृतिक परिवेश और लोक जीवन को केंद्र में रखकर अपनी विशिष्टता बनाए रखी। इस प्रकार यह शैली मुगल और राजस्थानी तत्वों का संतुलित मिश्रण है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व

भित्ति चित्रकला तत्कालीन समाज का दृश्य-इतिहास प्रस्तुत करती है। इससे–

1. राजपूत शौर्य और सत्ता संरचना का ज्ञान मिलता है।
2. स्त्रियों की सामाजिक भूमिका और सौंदर्य-बोध का अध्ययन संभव है।
3. लोक-जीवन, वस्त्राभूषण और संगीत परंपरा का दस्तावेजीकरण होता है।
4. क्षेत्रीय पहचान और सांस्कृतिक अस्मिता को समझा जा सकता है।

इस प्रकार, यह कला इतिहास, समाजशास्त्र और सांस्कृतिक अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण स्रोत है।

निष्कर्ष

हाड़ौती क्षेत्र का भित्ति चित्रण राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा का एक महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट अध्याय है। इसके अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यह कला केवल राजदरबारों की सौंदर्याभिव्यक्ति नहीं थी, बल्कि तत्कालीन समाज, धर्म, राजनीति और प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण का सजीव दृश्य-दस्तावेज भी थी। बूंदी और कोटा शैलियों के माध्यम से हाड़ौती ने भारतीय चित्रकला को एक ऐसी पहचान दी, जिसमें स्थानीयता, प्राकृतिक सौंदर्य और राजसी वैभव का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

बूंदी शैली की भावप्रवणता, हरित एवं वर्षामय प्राकृतिक पृष्ठभूमि तथा रागमाला एवं धार्मिक आख्यानों का सूक्ष्म चित्रण इसे अत्यंत आकर्षक बनाता है। दूसरी ओर, कोटा शैली के शिकार दृश्य, गतिशील संरचना और यथार्थवादी पशु-अभिन्यास शक्ति और क्रियाशीलता के प्रतीक हैं। इन दोनों शैलियों में मुगल प्रभाव तो दिखाई देता है, किन्तु स्थानीय परिवेश और लोक-संस्कृति ने इन्हें मौलिक स्वरूप प्रदान किया।

हाड़ौती के भित्ति चित्रों का अध्ययन यह भी दर्शाता है कि कला यहाँ सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना से गहराई से जुड़ी थी। चित्रों में अंकित वस्त्राभूषण, स्थापत्य, उत्सव, दरबारी जीवन और धार्मिक अनुष्ठान उस युग के जीवन-मूल्यों को समझने में सहायक हैं। अतः ये चित्र ऐतिहासिक स्रोत के रूप में भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

वर्तमान समय में जलवायु, उपेक्षा और मानवीय हस्तक्षेप के कारण अनेक भित्ति चित्र क्षतिग्रस्त हो रहे हैं। इसलिए इनके वैज्ञानिक संरक्षण, प्रलेखन और अकादमिक अध्ययन की अत्यंत आवश्यकता है।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि हाड़ौती का भित्ति चित्रण कला, इतिहास और सांस्कृतिक अस्मिता का संगम है, जिसका संरक्षण और गहन अध्ययन न केवल क्षेत्रीय बल्कि राष्ट्रीय विरासत की रक्षा के लिए भी अनिवार्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आर्चर, डब्ल्यू. जी. राजपूत पेंटिंग. लंदन: फेबर एंड फेबर, 1949.
2. चन्द्र, प्रमोद. द बूँदी स्कूल ऑफ पेंटिंग. नई दिल्ली: राष्ट्रीय संग्रहालय, 1956.
3. रंधावा, एम. एस. बूँदी पेंटिंग. नई दिल्ली: राष्ट्रीय संग्रहालय, 1968.
4. रंधावा, एम. एस. कोटा पेंटिंग. नई दिल्ली: राष्ट्रीय संग्रहालय, 1962.
5. गोस्वामी, बी. एन. द स्पिरिट ऑफ इंडियन पेंटिंग. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, 2014.
6. आर्य, राम तोशी. बूँदी गढ़ पैलेस पेंटिंग्स. जयपुर: रावत पब्लिकेशन, 2017.
7. सूधा, जी. पेंटेड रूम्स ऑफ कोटा गढ़. नई दिल्ली: INTACH, 2017.

8. **राजस्थान राज्य अभिलेखागार. बूँदी राज्य के अभिलेख (17वीं-18वीं शताब्दी). बीकानेर: राजस्थान सरकार.**
9. **राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग. बूँदी एवं कोटा भित्ति चित्र संरक्षण प्रतिवेदन. जयपुर: राजस्थान सरकार.**
10. **कोटा जिला गजेटियर. जयपुर: राजस्थान सरकार.**
11. **बूंदी जिला गजेटियर. जयपुर: राजस्थान सरकार**